

# SIGNING OF MEMORANDUM OF UNDERSTANDING (MOU) (CSB-CTRTI-RANCHI & FRC-ER PRAYAGRAJ)



## MEMORANDUM OF UNDERSTANDING



**Central Tasar Research and Training Institute, Ranchi  
&  
Forest Research Centre for Eco-Rehabilitation, Prayagraj**

— • 29<sup>th</sup> November 2022 • —

**FOREST RESEARCH CENTRE FOR ECO-REHABILITATION, PRAYAGRAJ**  
(A Centre of Indian Council of Forestry Research and Education, Dehradun, an autonomous body of MoEF & CC, Govt. of India)



29<sup>th</sup> November, 2022

3.00 PM	Signing of <i>MoU</i> between CTRTI, Ranchi & FRC-ER Prayagraj	
	<p><b>CTRТИ, Ranchi</b></p> <p>Dr. K. Sathyanarayana, Director, CTRТИ, Ranchi            Dr. J. P. Pandey, Scientist - D            Dr. J. Binkadakatti, Scientist - C</p>	<p><b>FRC-ER Prayagraj</b></p> <p>Dr. Sanjay Singh, Scientist- G &amp; Head, FRC-ER Prayagraj            Dr. Anita Tomar, Scientist –F &amp; Coordinator (Research)            Dr. Alok Yadav, Scientist –E &amp; Coordinator (Extension)</p>
3.30 PM	Discussion: Technological Empowerment and Skill Development by Tasar Silk Cultivation in Eastern U.P. <ul style="list-style-type: none"> <li>• KVKs, NGO, SFD and local farmers</li> </ul>	
4.30 PM	Vote of thanks, Dr. Anubha Srivastava, Scientist-D & Coordinator (Education)	

Central Tasar Research and Training Institute established in 1964 under the aegis of Central Silk Board to conduct R & D to cater to the needs of Tasar silk Industry (both tropical and temperate), a tribal based rural enterprise in the country. With its network of eight Regional stations (RTRS), eleven Extension Centres (REC), the Institute provides the state-of-the-art technological know-how to the command states, both under tropical and temperate Tasar sector. The Institute is mandated to serve as the National Institute to organize and promote Tasar silk industry through basic and applied research, extension and technology transfer and generation of trained human power in Tasar industry. Conduct of basic and applied research on Tasar host plants and silkworms for improvement and optimization of output and on post-cocoon aspects for increasing the rate of production and refinement in process for quality yarn and fabrics. CTRТИ Mission is to enhance the productivity, quality and quantity of Vanya silk.





CTRTI Ranchi & FRC-ER Prayagraj entered into MOU on 29.11.2022 at FRC-ER Prayagraj. Dr K. Sathyanarayana, Director, CTRTI Ranchi and Dr. Sanjay Singh, Head of FRC-ER briefed on the objective of the MOU i.e., collaboration on R&D, plantation of tasar host plants, development of FPOs, exchange of scientific manpower etc. Dr. Anita Tomar, Coordinator (Research) briefed the participants about types of silk and informed that silk is deeply integrated with the region it comes from as each region has its own specialty. Dr. Alok Yadav, Coordinator (Extension) informed the interested participants how they can enrol for Tasar Silk Training with the CTRTI Centre in Uttar Pradesh.

Dr. J. P. Pandey, Scientist D from CTRTI also discussed with participants that Tussar silk comes from the Tussar belt of central India in the states of Jharkhand, Chhattisgarh, West Bengal, and Bihar. It occupies the biggest space in the Vanya silk category and is extremely popular among silk wearers. More than 95% of silk production in the world happens in Asia, and the bulk of it happens in China and India. Dr. Jagat Jyoti Binkadakatti, Scientist-C informed that in the year 2020-21, India produced 33771 metric tonnes of silk yarn, most of which come from South and North East India. Karnataka, Andhra Pradesh, Jharkhand, and Assam are clear silk leaders of India.



Besides CTRTI & FRC-ER scientists, scientist of KVK Kaushambi, progressive farmers, FPOs, NGO were also present on the occasion and participated in open interactive session with scientists and officials. Dr. Anubha Srivastav, Coordinator (Education) deliver vote of thanks.





# रेशम की खेती को बढ़ावा देने के लिए हुआ एमयू मूंज आधारित आजीविका के लिए हस्तकला प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र प्रयागराज द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत मंगलवार को किसानों की आय बढ़ाने के लिए 'मूंज आधारित आजीविका हेतु हस्तकला' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। साथ ही पूर्वी उप में तसर (रेशम) की खेती को बढ़ावा देने के लिए पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज तथा केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची के मध्य समझौता ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. के. सत्यनारायण, निदेशक, केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची व केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने किया। केन्द्र प्रमुख ने पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा आयोजित मूंज आधारित प्रशिक्षण को अभिनव का विषय बताया।

उन्होंने बताया कि मूंज आधारित आजीविका हेतु हस्तकला के माध्यम से निर्मित वस्तुओं द्वारा किसानों

प्रशिक्षकों का परिचय देते हुए एक जिला एक उत्पाद के अंतर्गत मूंज की भूमिका और उपयोग पर प्रकाश

किया गया। जिसके अंतर्गत मूंज के उपयोग से बनने वाली विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को हस्तकला

के छात्र-छात्राओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। पूर्वी उप में तसर (रेशम) की खेती को बढ़ावा देने के लिए पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज तथा केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची के मध्य समझौता ज्ञापन किया गया। जिसके अंतर्गत दोनों संस्थान रेशम की खेती को उत्तर प्रदेश में बढ़ाने के लिए कृषकों को प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहयोग प्रदान करने के लिए मिलकर कार्य करेंगे। केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान से निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जेपी पाण्डेय तथा डॉ. के. बिनकाडाकट्टी उपस्थित रहे। केन्द्र के अधिकारियों, प्रभागीय वन अधिकारी-प्रयागराज, समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, प्रयागराज तथा कौशाम्बी के साथ विभिन्न गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा समझौता ज्ञापन विषय पर अपने-अपने विचार व्यक्त किये गये। केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान से उपस्थित तसर (रेशम) विशेषज्ञों ने सभी प्रतिभागियों को तसर उत्पादन तथा इससे होने वाले लाभों पर विस्तृत जानकारी दी।



की आय बढ़ाने के साथ ही भारत की अर्थव्यवस्था में भी सुधार लाया जा सकता है। कार्यक्रम समन्वयक, आलोक यादव वरिष्ठ वैज्ञानिक ने

डाला। कार्यक्रम में उपस्थित मूंज प्रशिक्षक बीबी फातिमा तथा परबिन बानो द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को कार्यक्रम विषयक प्रशिक्षण प्रदान

के माध्यम से तैयार करने के तरीकों से अवगत कराया गया। कार्यक्रम में लगभग सौ से अधिक किसानों तथा नगर के विभिन्न महाविद्यालयों

## पूर्वांचल में होगी रेशम की खेती, हुआ समझौता



पूर्वी उत्तर-प्रदेश में तसर (रेशम) की खेती को बढ़ावा देने के लिए मंगलवार को पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र और केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान रांची के बीच समझौता हुआ। वन अनुसंधान केन्द्र के प्रभारी डा. संजय सिंह ने बताया कि इस खेती से किसानों की आय दोगुनी होगी। रेशम विशेषज्ञों ने उत्पादन तथा इससे होने वाले लाभों पर विस्तृत जानकारी दी। समझौते के दौरान केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक डा. के. सत्यनारायण, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. जेपी पाण्डेय, डा. के. बिनकाडाकट्टी आदि थे।



# प्रयागराज 3

## अमृत प्रभात

प्रयागराज, बुधवार 30 नवम्बर 2022

### योग प्रतियोगिता में शिक्षक, वि

प्रयागराज (नि.सं.)। परियोजना विद्यालय के शिक्षक का आयोजन ड्राफ्ट में किया गया। कार्यक्रम में ज शिक्षिकाओं ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम का उ गया। कार्यक्रम के संयोजक संस्थान के बताया गया कि कार्यक्रम में शिक्षक प्रथम स्थान पर रहे। द्वितीय स् कुमार हिलेटी रहे। जबकि विद्यालय कुरिया चक्र सर्विलियन विद्या कर्मार मित्रा, ग

### तसर उत्पादन व उसके लाभों की दी जानकारी

प्रयागराज (नि.सं.)। पूर्वी उत्तर-प्रदेश में तसर ( रेशम) की खेती को बढ़ावा देने के लिए पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज तथा केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची के मध्य मंगलवार को समझौता ज्ञापन किया गया, जिसके अंतर्गत दोनों संस्थान तसर रेशम कि खेती को उत्तर प्रदेश में बढ़ाने के लिए कृषकों को प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहयोग प्रदान करने के लिए मिलकर कार्य करेंगे। समझौता ज्ञापन के लिये केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान से निदेशक डॉ. के सत्यनारायण के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जेपी पाण्डेय तथा डॉ. के. बिनकाडाकट्टी उपस्थित रहे। केन्द्र के अधिकारियों, प्रभागीय वन अधिकारी-प्रयागराज, समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र, प्रयागराज तथा कौशाम्बी के साथ विभिन्न गैर-सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा समझौता ज्ञापन विषय पर अपने-अपने विचार व्यक्त किये गये। कार्यक्रम में केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान से उपस्थित तसर ( रेशम) विशेषज्ञों द्वारा उपस्थित सभी प्रतिभागियों को तसर उत्पादन तथा इससे होने वाले लाभों पर विस्तृत जानकारी प्रदान की गयी।



## मूँज आधारित आजीविका लिये दिया हस्तकला प्रशि

### प्रयागराज (नि.सं.)

पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र प्रयागराज द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत मंगलवार को किसानों की आय बढ़ाने के लिये मूँज आधारित आजीविका के लिये हस्तकला विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. के. सत्यनारायण, निदेशक, केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची व केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। केन्द्र प्रमुख डॉ. सिंह ने पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान



केन्द्र, प्रयागराज द्वारा आयोजित मूँज आधारित प्रशिक्षण को अभिनव का विषय बताया। इसी क्रम में उन्होंने बताया कि मूँज आधारित आजीविका के लिये हस्तकला के माध्यम से निर्मित वस्तुओं द्वारा किसानों की आय को बढ़ाने के साथ ही भारत की अर्थव्यवस्था में भी सुधार लाया जा सकता है। कार्यक्रम समन्वयक,

को कार्यक्रम विषय का प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का उद्घाटन किया। डॉ. सिंह ने मूँज आधारित प्रशिक्षण के बारे में अपने अनुभव को साझा किया। डॉ. सिंह ने बताया कि मूँज आधारित आजीविका के लिए हस्तकला के माध्यम से निर्मित वस्तुओं से किसानों की आय को बढ़ाने के साथ भारत की अर्थव्यवस्था में भी सुधार लाया जा सकता है। कार्यक्रम समन्वयक आलोक यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने एक जिला एक उत्पाद के

## प्रयागराज/पड़ोस

### किसानों की आय बढ़ाने में हस्तकला सहायक



पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र में मंगलवार को आयोजित मूँज आधारित आजीविका के लिए हस्तकला प्रशिक्षण कार्यक्रम में मौजूद विशेषज्ञ।

प्रयागराज, प्रमुख संवाददाता। प्रयागराज में लोगों को मूँज से उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र की ओर से मंगलवार को संस्थान के परिसर में आयोजित कार्यशाला में बीबी फातिमा, परवीन बानो ने मूँज से उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया।

मुख्य अतिथि डॉ. के सत्यनारायण व पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र के प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का उद्घाटन किया। डॉ. सिंह ने मूँज आधारित प्रशिक्षण के बारे में अपने अनुभव को साझा किया। डॉ. सिंह ने बताया कि मूँज आधारित आजीविका के लिए हस्तकला के माध्यम से निर्मित वस्तुओं से किसानों की आय को बढ़ाने के साथ भारत की अर्थव्यवस्था में भी सुधार लाया जा सकता है। कार्यक्रम समन्वयक आलोक यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने एक जिला एक उत्पाद के

### रेशम की खेती बढ़ाने के लिए करार

पूर्वी उत्तर प्रदेश में तसर ( रेशम) की खेती बढ़ाने के लिए पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र प्रयागराज और केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची के बीच मंगलवार को समझौता हुआ। इस समझौते के अंतर्गत दोनों संस्थान रेशम की खेती को उत्तर प्रदेश में बढ़ाने को कृषकों को प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहयोग प्रदान करेंगे। समझौता पर हस्ताक्षर के समय केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक, डॉ. के सत्यनारायण के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जे पी पांडेय तथा डॉ. के बिनकाडाकट्टी उपस्थित रहे।

अंतर्गत मूँज की भूमिका और उपयोग पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में लगभग 100 से अधिक किसानों तथा छात्र-छात्राओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।